Nai Dunia, 18th October 2017, Page - 03

एडवांस लैब से रसायन और वनस्पति जैसे विषय में रिसर्च करने वालों की बढ़ेगी संख्या

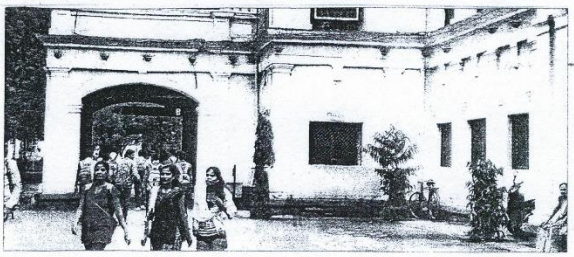

प्रदेश में एकमात्र सरकारी होलकर साइंस कॉलेज के पास ही वनस्पति, रसायन और बायोटेक्नोलॉजी विषय को लेकर साधन मौजूद हैं।

» साइंस विषय में पीएचडी करने वाले छात्रों को मिलेगा विशेष लाभ

» कई सरकारी कॉलेजों के पास वनस्पति और पौधों की अलग-अलग प्रजाति पर रिसर्च करने के लिए कोई साधन नहीं

indore@inext.co.in

INDORE (17 OCTOBER): प्रदेश के 300 सरकारी कॉलेजों में से बहुत कम के पास ही वनस्पति, रसायन शास्त्र, भूगर्भ शास्त्र, जंतु विज्ञान, बायोटेक्नोलॉजी, जैव विविधता के संरक्षण और औषधीय एवं सुगंधित पौधे की खेती संबंधित रिसर्च के साधन हैं। आधुनिक लैब नहीं होने से खासकर साइंस क्षेत्र में रिसर्च करने वाले छात्रों को कई तरह की परेशानी आती थी। कई पीएचडी करने वाले छात्रों को रिसर्च करने के लिए बाहर के राज्यों में जाना पड़ रहा था। भोपाल स्थित आधुनिक रिसर्च लैब का उपयोग छात्र नहीं कर पा रहे थे, लेकिन अब शिक्षा विभाग के प्रयास से छात्रों को इसका उपयोग करने के लिए हरी झंडी मिल गई है।

एकमात्र होलकर साइंस कॉलेज में है थोड़ी बहुत सुविधाएं

प्रदेश में एकमात्र सरकारी होलकर साइंस कॉलेज के पास ही वनस्पति, रसायन और बायोटेक्नोलॉजी विषय को लेकर साधन मौजूद हैं। हालांकि औषधीय एवं सुगंधित पौधे पर रिसर्च करने के लिए यहां भी कई तरह की कमी है। भोपाल की एडवांस लैब की विशेष परमिशन के बाद ही यहां के छात्र रिसर्च के लिए जाते थे, लेकिन अब सभी सरकारी कॉलेजों के छात्रों के लिए लैब की परमिशन मिलने के बाद रसायन और वनस्पति जैसे विषय में रिसर्च करने वालों की संख्या बढ़ सकेगी।

पौधों पर नई रिसर्च से मिलेगी प्रदेश को अलग पहचान

रसायन शास्त्र में रिसर्च करने के लिए तो कई सरकारी कॉलेजों के पास साधन हैं लेकिन वनस्पति और पौधों की अलग-अलग प्रजाति पर रिसर्च करने के लिए किसी के पास कोई साधन नहीं हैं। इससे कई बार कृषि कॉलेजों की लैब का उपयोग करने के लिए भी छात्र और प्रोफेसर्स को जाना पड़ता था। खासकर कॉमन रूप से होने वाली रिसर्च के लिए एडवांस लैब कारगर सिद्ध होगी। प्रोफेसर्स भी लैब होने से सिर्फ लिखित रिसर्च ही कर पा रहे थे, लेकिन अब लंबी और बेहतर प्रैक्टिकल रिसर्च को भी बढ़ावा मिल सकेगा।

यूनिवर्सिटी और आईआईटी जाने की जरूरत भी हुई खत्म

कई पीएचडी रिसर्च करने वाले छात्रों को यूनिवर्सिटी और आईआईटी की लैब का उपयोग करने के लिए विशेष परमिशन की जरूरत होती थी। यूनिवर्सिटी के पास बायोटेक्नोलॉजी संबंधित बेहतर साधन मौजूद हैं। रसायन शास्त्र को लेकर भी कई आधुनिक रिसर्च लैब हैं लेकिन कई जटिल रिसर्च जिनमें कई महीनों तक प्रयोग चलते रहते हैं, उनके लिए आईआईटी में मौजूद लैब की जरूरत भी छात्रों और प्रोफेसर्स को पड़ती थी। कुछ समय पहले तक यूनिवर्सिटी के खंडवा रोड पर आईआईटी का कैम्पस होने से लैब का फायदा स्थानीय छात्रों को मिल रहा था, लेकिन आईआईटी के सिमरोल कैम्पस में चले जाने से इंटरनेशनल स्तर की लैब मिलना मुश्किल हो गया था।

इस तरह की रिसर्च हो सकेगी

वनस्पति : दुनियाभर में वनस्पति पर कई अहम रिसर्च चल रही है। इसमें पेड़-पौधों से संबंधित रिसर्च होती है। बाहर के राज्यों में पौधों की नई प्रजाति पर काम हो रहा है, लेकिन लंबे समय से प्रदेश का नाम सामने नहीं आ रहा था।

रसायन शास्त्र : इसमें केमिस्ट्री संबंधित कई विषयों पर आधुनिक लैब नहीं मिलने से छात्र रिसर्च के लिए कम ही आगे आ पा रहे थे। कुछ साइंस कॉलेजों में रसायन शास्त्र पर प्रयोग करने के लिए सालों से एक जैसी लैब से काम चल रहा है।

भूगर्भ शास्त्र : इसमें अर्थ साइंस संबंधित कई रिसर्च होती है। प्रदेश में फिलहाल आईआईटी, एसजीएसआईटीएस जैसे संस्थानों में इस रिसर्च के बेहतर साधन हैं।

बायोटेक्नोलॉजी : बायोलॉजिकल, मेडिसिन क्षेत्र में कई तरह की रिसर्च विषय है, लेकिन इससे संबंधित रिसर्च लैब की लागत ज्यादा होती है, इसलिए प्रदेश में बहुत कम ही संस्थानों के पास इसकी सुविधा है। कई पेचीदा विषय पर रिसर्च करने के लिए प्रोफेसर्स को बेंगलुरु जैसे शहरों में जाना पड़ रहा है।

> उच्च शिक्षा विभाग के पास सरकारी कॉलेजों से लगातार एडवांस रिसर्च लैब की मांग की जा रही थी। इसके बाद भोपाल की एडवांस इंस्ट्रूमेंटेशन फैसिलेटी रिसर्च लैब के उपयोग की परमिशन छात्रों को दी गई है।
>
> डॉ. केरन चतुर्वेदी
> अतिरिक्त संचालक, उच्च शिक्षा विभाग

EDITORIAL FOCUS

रहवासी भी अपने स्तर पर रखें जागरुकता

» see pg 4